अढ़ाई दिन का झोपड़ा संबंधी ऐतिहासिक तथ्य

➢ चर्चा में क्यों ?

- अजमेर की एक अदालत द्वारा प्रतिष्ठित अजमेर शरीफ दरगाह के सर्वेक्षण के लिए दायर याचिका को स्वीकार करने के बाद अजमेर में ही स्थित ऐतिहासिक "अढ़ाई दिन का झोपड़ा" के लिए भी इसी तरह की मांग को जन्म दिया है।
- अजमेर शरीफ दरगाह के कुछ ही दूर स्थित भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा संरक्षित "अढ़ाई दिन का झोपड़ा" चर्चा का विषय बन गया है।
- इस मामले में अजमेर के डिप्टी मेयर नीरज जैन ने दावा किया है कि "अढ़ाई दिन का झोपड़ा" का इमारत मूल रूप से संस्कृत महाविद्यालय और मंदिर के रूप में था, जिसे आक्रमणकारियों ने ध्वस्त कर दिया था।
- नीरज जैन ने दावा किया कि आक्रमणकारियों ने भारतीय संस्कृति, शिक्षा और सभ्यता पर व्यापक हमले के तहत संस्कृत महाविद्यालय और मंदिर को ध्वस्त किया गया था।
- जैन ने यह भी आरोप लगाया है कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के पास इस मूल संस्कृत महाविद्यालय और मंदिर से जुड़ी 250 से अधिक मूर्तियां, स्वास्तिक चिन्ह, घंटियां और संस्कृत के शिलालेख हैं। अत: इसके लिए सर्वेक्षण की जरूरत नहीं है।

➢ अढ़ाई दिन का झोपड़ा :

- "अढ़ाई दिन का झोपड़ा" नामक मस्जिद का निर्माण 1192 ई. में "चुरिद सेना" के गुलाम से सेनापति बने कुतुबुद्दीन ऐबक ने करवाया था।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली सल्तनत को फिर से शुरू करने के लिए 1206 ई. में "मामलुक राजवंश" की स्थापना की थी।
- घोर के मोहम्मद द्वारा तराइन के द्वितीय युद्ध (1192) में पृथ्वीराज चौहान को पराजित करने के बाद कुतुबुद्दीन ऐबक ने अढ़ाई दिन का झोपड़ा का निर्माण किया था।
- हेरात के अबु बकर द्वारा इस मस्जिद को प्रारंभिक इंडो–इस्लामिक वास्तुकला के तहत डिजाइन किया।
- "अढ़ाई दिन का झोपड़ा" नामक इस इमारत का उपयोग मस्जिद के रूप में 1947 तक किया गया तथा भारत की आजादी के बाद इस संरचना को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के जयपुर सर्कल को सौंप दिया गया।
- वर्तमान में इस संरचना को हिंदू, मुस्लिम और जैन वास्तुकला के मिश्रण के बेहतरीन उदाहरण के रूप में सभी धर्मों के लोगों के लिए यह एक पर्यटक स्थल के रूप में है।
- विभिन्न ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार इस संरचना का नाम "अढ़ाई दिन का झोपड़ा" इसलिए रखा गया क्योंकि कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसे 60 घंटे में बनाने का आदेश दिया था।
- हालांकि उपरोक्त तथ्य को कुछ इतिहासकार असत्य मानते हैं क्योंकि 18 वीं सदी तक विभिन्न ऐतिहासिक ग्रंथों में "अढ़ाई दिन का झोपड़ा" शब्द का कोई उल्लेख नहीं किया गया है।
- कुछ इतिहासकारों का मानना है कि इस संरचना का नाम "अढ़ाई दिन का झोपड़ा" इसलिए पड़ा क्योंकि कुछ फकीर अपने धार्मिक नेता पंजाब शाह के ढाई दिवसीय उर्स (पुण्यतिथि) के दौरान इस संरचना में आश्रय लेते थे।

➢ ढाई दिन के झोपड़ा के संबंध में विभिन्न इतिहासकार

❖ हर विलास शारदा

- अजमेर के प्रसिद्ध न्यायविद एवं इतिहासकार हर विलास शारदा ने अपनी रचना "अजमेर हिस्टॉरिकल एंड डिस्क्रिप्टिव" (1911) में लिखा कि घोर के मोहम्मद ने अजमेर शहर में अपने छोटे से प्रवास के दौरान "अढ़ाई दिन के झोपड़ा" नामक स्थल पर स्थित मूल मंदिर के मूर्ति, स्तंभों और नींव को नष्ट कर दिया तथा इसी के पास स्थित विसलदेवा संस्कृत महाविद्यालय की संरचना को भी नष्ट कर दिया।
- इसी नष्ट किए गए मंदिर और संस्कृत महाविद्यालय के एक भाग को मस्जिद में परिवर्तित कर दिया गया, जिसे वर्तमान में "अढ़ाई दिन का झोपड़ा" के नाम से जाना जाता है।

- हर विलास शारदा की पुस्तक के अनुसार अढ़ाई दिन के झोपड़े नामक मस्जिद के केंद्रीय मिहराब में एक शिलालेख है, जो इसके 1199 में पूरा होने का संकेत देता है।
- इस शिलालेख के अनुसार "अढ़ाई दिन के झोपड़े" नामक स्मारक अजमेर में स्थित सबसे पुराना जीवित स्मारक और उत्तर भारत में दिल्ली के "कुव्वत उल इस्लाम" मस्जिद के बाद दूसरी सबसे पुरानी पूर्ण मस्जिद बनाता है।
- इस मस्जिद के मुखौटे को बनाने वाली प्रतिष्ठित दीवार एवं इसके साथ घुमावदार मेहराबों को कुतुबुद्दीन के दामाद और दिल्ली सल्तनत के तीसरे सुल्तान इल्तुतमिश ने बनवाया था, जो 1213 ई. में पूरी तरह से निर्मित हुआ।
- हर विलास शारदा की इसी पुस्तक को "अजमेर शरीफ दरगाह" सर्वेक्षण याचिका में याचिकाकर्ताओं द्वारा प्राथमिक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में पेश किया गया है।

❖ मिकेल डब्ल्यू मिस्टर

- दक्षिण एशिया का स्थापत्य इतिहास के लिए जाने जाने वाले कला इतिहासकार माइकल डब्ल्यू मिस्टर के अनुसार अढ़ाई दिन के झोपड़ी नामक इमारत के निर्माण के संबंध में दो प्रमुख बातों का उल्लेख किया।
- उन्होंने कहा कि अढ़ाई दिन के झोपड़ा नामक मस्जिद के स्तंभ वाले हॉल का निर्माण में हिंदू मंदिर में स्थित स्तंभ से किया गया एवं इस मस्जिद के निर्माण में हिंदू श्रमिकों की तैनाती मुस्लिम देखरेख में की गई।
- मिस्टर के अनुसार मस्जिद के स्तंभ वाले हॉल का निर्माण में तोड़े गए हिंदू मंदिर के स्तंभ का उपयोग हॉल को एक नई ऊंचाई देने के लिए किया गया।
- इन खंभों में से 70 खंभे आज भी खड़े हैं, जिनके बाहरी भाग में अन्य उल्लेखनीय वास्तुकला का निर्माण किया गया।
- मिस्टर के अनुसार मस्जिद के स्तंभों के अलावा इसके लिंटल्स और छत भी चौहान वंश से जुड़ी वास्तुकला के सबूत दिखाते हैं।

➢ मस्जिद स्थल के मूल में हिंदू कॉलेज एवं मंदिर :

- हरविलास शारदा द्वारा लिखित पुस्तक में बताया गया है कि जैन परंपरा के अनुसार मस्जिद वाले स्थल पर एक जैन इमारत का निर्माण 660 ई. में सेठ बिरमदेव काला द्वारा "पंच कल्याण महोत्सव" का आयोजन के लिए किया गया था।
- "पंच कल्याण महोत्सव" जैन तीर्थकार के जीवन में पांच शुभ घटनाओं को चिन्हित करने के लिए पांच दिवसीय उत्सव है।

- ईस्ट इंडिया कंपनी के एक अधिकारी "जेम्स टॉड" जिन्होंने 1819 में "अढ़ाई दिन के झोपड़ा" का दौरा किया था, का मानना था कि यह मस्जिद एक जैन मंदिर की जगह पर बनाया गया है।
- जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक "एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" (1829) में इस स्मारक का वर्णन हिंदू वास्तुकला के सबसे उत्तम और सबसे प्राचीन स्मारकों के रूप में किया है।
- हालांकि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के संस्थापक महानिदेशक अलेक्जेंडर कनिंघम के अनुसार अजमेर मस्जिद कई हिंदू मंदिरों को लूटकर बनाई गई थी एवं इसमें उपयोग किए गए स्तंभ जैन स्तंभ नहीं है क्योंकि इस स्तंभ में चार सशस्त्र आकृतियां एवं कंकाल, देवी काली की एक आकृति मिली थी, जो इसे हिंदू मंदिर के रूप में दर्शाता है।
- वर्ष 1874–75 में इस स्थल पर ASI द्वारा की गई खुदाई में कई शिलालेख मिले, जिनमें एक संस्कृत कॉलेज का उल्लेख था।
- हर विलास शारदा के अनुसार इस संस्कृत कॉलेज का निर्माण 1153 ई. में चौहान वंश के सम्राट विशालदेव ने कराया था।

➢ भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) :

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) भारत की सांस्कृतिक विरासतों के पुरातत्वीय अनुसंधान तथा संरक्षण के लिए एक प्रमुख संगठन है, जो भारत के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करता है।
- इसकी स्थापना 1861 ई. में की गई है।
- इसका मुख्यालय "देहरादून" में स्थित है।